मैं हूँ कार्ल रिट्टर

जी हां, मैंने अपनी बारी आने का धैर्यपूर्वक इन्तजार किया है। मुझे हमेशा ही इस पर आश्चर्य होता है कि आप सभी लोग सदैव महान अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ड्ट के बाद ही मेरे नाम का उल्लेख क्यों करते हैं। हमेशा ही यह लिखा पाया जाता है हम्बोल्ड्ट और रिट्टर। इसे विपरीत रूप में क्यों नहीं लिखा जा सकता? रिट्टर और हम्बोल्ड्ट - देखिए यह सुनने में कहीं बेहतर नहीं लगता? क्या मेरा योगदान हम्बोल्ड्ट से कम है या आप सब लोग महज इसलिए पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाते हैं क्योंकि मैं उनसे दस वर्ष छोटा हूँ। खैर जो भी, हम इसे भूलाकर आगे बढ़ें।

मेरा जन्म अगस्त 1779 में जर्मनी, जिसे पहले प्रशिया के नाम से जाना जाता था, के क्वेडलिनबर्ग शहर में हुआ था। 'अपने समकालीन हम्बोल्ड्ट की' तरह मेरा परिवार कुलीन नहीं था। पांच वर्ष की अतिसंवेदनशील आयु में मेरे प्रिय माता-पिता ने गोटा के समीप श्नेफेन्थल नामक स्थान पर स्थित एक प्रायोगिक विद्यालय में भेज दिया जहां आगे मुझे उस समय के महान चिंतकों के सानिध्य में रहने का अवसर मिला। यहां के शिक्षण पर रूसो और पेस्टालोजी के सिद्धान्तों का प्रभाव था, जिनका सानिध्य पाने का सौभाग्य मुझे बाद में मिला था। संभवतः उन्हीं कारणों से अपने आस-पास से बाहर की चीजों के बारे में सोचने का मुझे सामर्थ्य मिल पाया था।

उस समय के प्रसिद्ध भूगोलविद् जी.सी.टी. गट्स मथुस मुझे प्रेमपूर्वक पढ़ाया करते थे। मैं उन व्याख्यानों को कभी नहीं भूल पाऊँगा जब पहलीबार उन्होंने व्यक्ति और पर्यावरण के बीच विद्यमान संबंधों के बारे बताया था। हमलोगों ने कई स्थानों की यात्रा की और मैंने बहुत सारी स्थलाकृतियों को देखा और वास्तव में प्रकृति में व्याप्त एकात्मकता से प्रभावित हुआ। हाँ, यह सही है कि

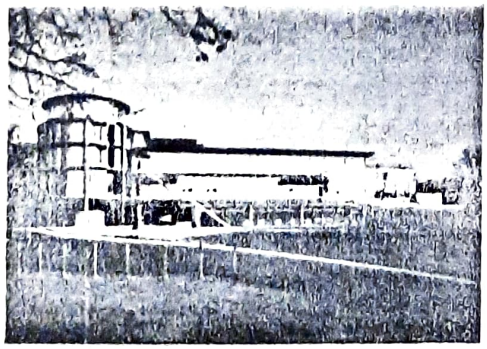

गेटिंजेन विश्वविद्यालय का भव्य पुस्तकालय

प्रो. स्पेनियों के साथ वार्ता करते हुए कार्ल रिट्टर

मैं विस्मय में पड़ा था! मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी पर्यावरण मानव पर इतना गंभीर प्रभाव डाल सकता है।

भूगोल में मेरी अभिरूचि बढ़ती चली गई। मैंने अपने आस-पास की दुनिया का अध्ययन किया और अपने स्केच के माध्यम से उन सबका विस्तृत विवरण उतारने में महारत हासिल कर ली। उन दिनों मैं देर तक अपने कमरे के सामने बैठा रहकर पूरे मनोयोग से पेंटिंग करता रहता। आप इन पेंटिंगों को कभी और देख लेना।

भाषाओं को जानने के बारे में मेरी जन्मजात प्रवृति ईश्वर का वास्तव में मेरे लिए उपहार था जिसके कारण मैं ग्रीक और लैटिन भाषा का अध्ययन कर पाया। अब मैं उत्कृष्ट चिंतकों के विचारों को अधिक से अधिक विस्तारपूर्वक पढ़ सकता था।

16 वर्ष की आयु में एक धनवान बैंकर के पुत्रों को ट्युशन पढ़ाने से प्राप्त पैसे से मैंने विश्वविद्यालय में पढ़ना शुरू कर दिया।

वर्ष 1804 में बीस वर्ष की अवस्था पार कर लेने के बाद मैंने प्रसिद्ध गेटिनजेन विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। हां, बिल्कुल सही इसी विश्वविद्यालय मे प्रसिद्ध हम्बोल्ड्ट ने भी अध्ययन किया था।

मैंने भी उन्हीं की तरह इतिहास, भूगोल, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रसायन और खनिजशास्त्र सहित विभिन्न विषयों का अध्ययन किया। यदि आपको आश्चर्य लग रहा है तो यह जान लीजिए कि हम्बोल्ड्ट से मेरी मुलाकात उसी वर्ष हुई थी। मुझे अभी भी बारिशपूर्ण शुक्रवार की दोपहर याद है जब मेरे एक बहुत अच्छे दोस्त ने मेरा महान अलेक्जेंडर से परिचय कराया था। बिल्कुल सही बात है, मैं इससे इनकार नहीं कर सकता कि मैं इस व्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ था। लेकिन फिर, मुझे उस व्यक्ति जैसी विस्तृत यात्रा करने की इच्छा या यों कहिए कि धुन नहीं थी। मैंने उनके साथ बहुत सारी विस्तृत चर्चा की और उनके द्वारा यात्रा किये गये स्थानों

वहां के समाजों के बारे में मौलिक जानकारी प्राप्त की। वस्तुतः उनके द्वारा कहे गये एक-एक शब्द मेरे मनमस्तिष्क में समा गये थे और बाद के वर्षों में मैं उन शब्दों को समय-समय पर दोहराया करता था।

हाँ, वर्ष 1807 मेरे लिए कई मायने में अतिमहत्वपूर्ण वर्ष था। मेरी पहली पुस्तक जिस पर मैं वर्ष 1804 से लगातार चार वर्षों तक कार्य करता रहा था, अन्ततः प्रकाशित हो ही गई। उस पुस्तक में था क्या। वह यूरोप के भूगोल के बारे में लिखी गई पुस्तक थी। मैं प्रिंट रूप में पुस्तक को देखकर तो रोमांचित था ही बल्कि शैक्षणिक दुनिया में भी उस पुस्तक को काफी प्रशंसा मिली थी।

रिट्टर अबतक एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था। मैं अति गौरवान्वित महसूस करने लगा कि मेरे प्रयासों को धीरे-धीरे पुरस्कृत किया जाने लगा था। जी हाँ, मैं भावी पीढ़ी को सभी प्रकार की वैज्ञानिक विषमताओं से भरे देशों और शहरों के बारे में दिए तथ्यों के पारंपरिक नीरस सारांश के स्थान पर एक नया वैज्ञानिक भूगोल की शिक्षा देना चाहता था। मैं अपने शैक्षणिक सर्किल से संतुष्ट था जहां मैं अपने कई मित्रों के साथ उनके अनुभवों के बारे चर्चा, वाद-विवाद और विचार -विमर्श कर सकता था। उनमें खगोल विज्ञानी समरिंग, भूगर्भविज्ञानी ईबेल और मेरे प्रिय शिक्षा सुधारक, प्रो. पेस्टालॉजी के नाम प्रमुख थे। हालांकि, मैंने एक व्यवसाय के रूप में बहुत बाद में वर्ष 1818 के आस-पास पढ़ाना शुरू किया था और प्रबुद्धयुवा चेहरों से भरे मेरे व्याख्यान हॉलों को देखकर मुझे बहुत खुशी मिलती थी और अपना जीवन मुझे अतिमूल्यवान और विस्मयकारी लगता था।

खैर मेरे पहले प्रकाशन के चार वर्षों के बाद मेरा दो खंडो वाला दूसरा प्रकाशन भी आया जोकि एक बार फिर यूरोप के भूगोल के बारे में था। हां 1811 मेरे लिए एक दूसरा अच्छा वर्ष रहा। लेकिन फिर, आगे मुझे लिखने की सबसे बड़ी

बर्लिन विश्वविद्यालय में रिट्टर के व्याख्यान में उपस्थित हमबोल्ड्ट 1840

प्रेरणा मिली। जो भी अवधारणा मैंने विकसित की थी उसके आधार मुझे बहुत कुछ लिखने की इच्छा होने लगी थी जिसके के कारण मुझे अपने द्वारा पहले लिखी गई पुस्तक तुच्छ नजर आने लगी थी। पहली बार मैं पूरी तरह समझ पाया था कि धुन क्या होती है।

हम्बोल्ड्ट से मुलाकात होने के बाद उनके द्वारा गढ़ा गया 'एर्डकुण्डे' शब्द मेरे दिमाग में नाचता रहा। मैं वर्षों तक उसके बारे में विचारमग्न रहा और अन्ततः छः वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद मेरी महानतम पुस्तक प्रकाशित हुई। वर्ष 1817 में मेरी प्रमुख पुस्तक 'डाई एर्डकुण्डे' या अर्थ साइंस जो विश्वभर में प्रचलित 'ज्योग्राफी' का शाब्दिक जर्मन अनुवाद था, का पहला खंड प्रकाशित हुआ था।

मैं इसे विलक्षण अध्ययन का वस्तु बनाना चाहता था। मैं अपनी पुस्तकों के पृष्ठों में सम्पूर्ण विश्व को कैद कर लेना चाहता था। यह विश्व की एक पूर्ण और बेजोड़ भूगोल की पुस्तक होगी। मैं लिखता चला गया और मेरी पुस्तक के 19 खंड

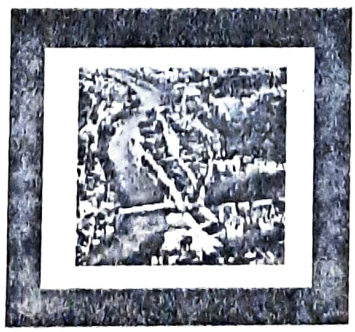

स्प्री आर्डर नहर से बर्लिन का हवाई सर्वेक्षण

तैयार हो गये जिनमें 20,000 पृष्ठ थे। और एक चीज। मुझे यह कहने में कोई शर्म नहीं कि मैं ने अपनी पुस्तक में हम्बोल्ड्ट के अनुभवों का भारी उपयोग किया। लेकिन उन्होंने कभी भी इतिहास और भूगोल के बीच के सम्पर्क को महसूस नहीं किया। मुझे उसके बारे में अच्छी अनुभूति थी। आज आपलोगो को इन दोनों विषयों के बीच के अंतर्संबंध की कहीं अच्छी जानकारी होगी परन्तु हमारे समय में यह इतना स्पष्ट नहीं था।

मुझे यह महसूस ही नहीं हो सका कि वर्ष दर वर्ष किस प्रकार बीतते चले गये। मैं अपने विचारों को कागजों में उतारने में इतना लीन हो गया कि मुझे पता ही नहीं चल पाया कि वर्ष 1817 कैसे वर्ष 1859 में तब्दील हो गया। एक दिन अपने कार्यों पर नजर डालते हुए मेरी नजर दरवाजे पर लगे शीशे से टकरायी तो मैं एक बूढ़े व्यक्ति को अपनी ओर घूरते देखकर आश्चर्य चकित हो उठा। अस्सी वर्षों का लम्बा समय मुझे बिल्कुल बीते कल के समान प्रतीत हो रहा था।

यदि आप कभी मेरी पुस्तकों को पढ़ेगें तो आप पायेंगे कि मेरी सभी पुस्तकों में ईश्वर के प्रति विश्वास झलकता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस पृथ्वी पर सभी कुछ ईश्वर की योजना के अनुसार ही होता है।

'विविधता में एकता' मेरा मौलिक दृष्टिकोण था। इस विश्व के प्रत्येक सजीव और निर्जीव संघटकों के बीच निश्चित तौर पर सामंजस्य विद्यमान रहता है भले ही वह उतना स्पष्ट नहीं दीखे। अब किसी भी प्रकृति से घिरे क्षेत्र को देखें। क्या आपको इस घिरे हुए क्षेत्र में प्रकृति और संस्कृति का संगतपूर्ण समावेश नजर नहीं आता? आपको अवश्य नजर आयेगा! हां इस क्षेत्र में निवास करने वाली प्रजातियों की भी कुछ खास विशेषताएं होती हैं जो कि उन्हीं को विचित्र नजर आता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आप मुझे एक क्षेत्रीय भूगोलविद् के रूप में जाने।

रिट्टर की यात्रा

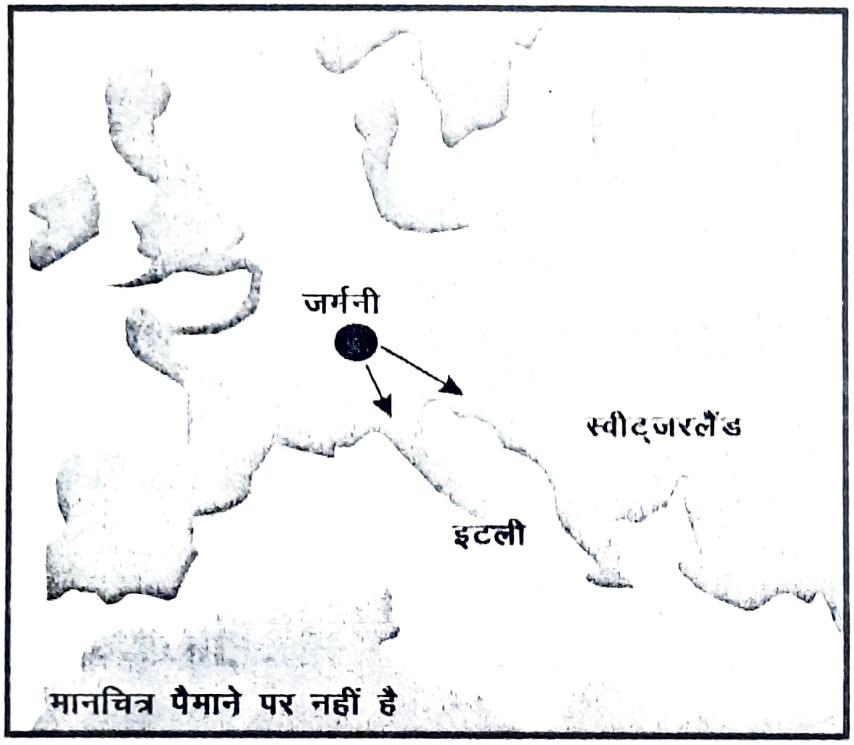

लेकिन आप यह नहीं सोचें कि मैं सारा जीवन लिखता ही रहा। मैंने अन्य कार्य भी किये। किस प्रकार के कार्य? देखिए वर्ष 1819 में मुझे यूनिवर्सिटी ऑफ फ्रैंकफर्ट में इतिहास के प्रोफेसर का पद दिया गया था और अगले वर्ष जर्मनी बर्लिन विश्वविद्यालय में भूगोल का विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। युवा व्यक्तियों को पढ़ाने का मेरा स्वप्नः अन्ततः सच साबित हुआ। मेरे व्याख्यान हॉल हमेशा भरे रहते थे। एक शिक्षक को और क्या चाहिए? 1840 के आस-पास आप अनुमान लगाइए कि मेरा व्याख्यान नियमित रूप से कौन सुनने आता था। हां, बिल्कुल ठीक, वह महान हम्बोल्ड्ट ही थे। उन्हीं दिनों उनके द्वारा कॉस्मोस पर दिये जाने वाले कुछ व्याख्यान को सुनने मैं भी जाता था। जिस दिन व्याख्यान से हम्बोल्ड्ट अनुपस्थित रहते थे, छात्रों की टिप्पणी होती थी, "ओह उनकी मुलाकात राजा के साथ हो रही होगी।" बहुत से संस्थानों में विशिष्ट पद धारण किये हुए था। एक ऐसा संस्थान बर्लिन ज्योग्राफिकल सोसायटी भी था जिसकी स्थापना मैंने ही की थी।

और ऐसा भी नहीं है कि मैंने यात्रा बिलकुल ही नहीं की थी। यद्यपि, मैं इस बात से सहमत हूँ कि

हम्बोल्ड्ट एक दृष्टि में

भूगोल के बारे में हम्बोल्ड्ट के विचार उल्लेखनीय तौर पर उच्चतर थे। उन्होंने कई महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख किया;

- पृथ्वी को एक अपृथकीय पूर्ण अवयव माना जिसके मानव सहित सभी अंग पारस्परिक तौर पर एक दूसरे पर निर्भर हैं।
- वे वैज्ञानिक प्रक्रिया में विश्वास करते थे। अरस्तु की परम्परा को अपनाते हुए प्रेरक तर्कशक्ति पर जोर डालते थे।
- यद्यपि वह पहले किसी खास घटना का ही अध्ययन आरम्भ करते थे। और फिर सामान्यीकरण की दिशा में आगे बढ़ते थे, प्रकृति की किसी एक ही प्रकार की घटना को आंकना ही उनका उद्देश्य कभी नहीं रहा।
- उनका उद्देश्य उस तरीके को दर्शाना था जिसके अन्तर्गत प्रकृति की बहुत सारी घटनाएं पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर एक-दूसरे के साथ अंतक्रिया करती हैं।
- उनका यह मानना था कि घटनाओं के बीच के अंतर्संबंध को जानने के बाद ही उनमें से किसी घटना का मूल्यांकन किया जा सकता है।
- भूगोल में, उन्होंने घटनाओं के विभिन्न रूपों के महज वर्गीकरण के बदले घटनाओं के वितरण पर अधिक बल दिया था।
- हम्बोल्ड्ट ने हमेशा ही सभी स्थानों का यथातापूर्वक सटीक मापन किया। अपने वितरणों के समर्थन में उन्होंने कठिन फील्डवर्क किया था।
- हम्बोल्ड्ट पारम्परिक अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्रीयवादी दृष्टिकोण रखते थे।
- उन्होंने असमान क्षेत्रों को हमेशा ही अलग-अलग रखा और उनमें जो समान क्षेत्र थे उनका तुलनात्मक अध्ययन किया।
- उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'कॉस्मोस' वर्ष 1845 में प्रकाशित हुई थी।

रिट्टर एक दृष्टि में

- क्षेत्रीय भूगोल (रीजनल ज्योग्राफी) के संस्थापक के रूप में उनका यह मानना था कि तथ्यों को जुटाना ही अपने आप में अन्तिम उद्देश्य नहीं है। क्षेत्र दर क्षेत्र आंकड़ों को क्रमबद्ध करने और उनकी तुलनात्मक अध्ययन करने से सुस्पष्ट विविधता में एकात्मकता की प्रतिस्थापना हो सकेगी।
- क्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाते हुए रिट्टर ने विभिन्न महाद्वीपों में टिके रहने वाले नस्ल विशेषों के विशेष लक्षणों की पहचान की थी।
- उन्होंने थल और जल गोलार्द्धों का स्पष्ट विभाजन कर दिया था और थल तथा जल के स्तरों के ठंडा होने की अन्तरीय दरों को अंकित कर दिया था।
- उन्होंने ही उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों में थल और जल के आनुपातिक अन्तर की व्याख्या की थी।
- रिट्टर ने भूगोल में आकरिमकता के साथ-साथ तुलनात्मक भूगोल के महत्व को मान्यता दी थी तथा गौतिक और ऐतिहासिक भूगोल की धारणा को भी प्रतिपादित किया था।

दुर्भाग्यवश रिट्टर अपनी मृत्यु से पूर्व केवल एशिया और अफ्रीका के बारे में ही लिख पाया और यह संयोग ही है कि उसकी मृत्यु भी वर्ष 1859 में हुई थी जिस वर्ष अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ड्ट की मृत्यु हुई थी। यदि आप अंग्रेजी में पुस्तक पढ़ना चाहते हैं, तो 'दि साइंस ऑफ दि अर्थ' पढिए।

हम्बोल्ड्ट और रिट्टर कई रूपों में एक समान थे; आइए देखें कि उनमें क्या-क्या समानता थी?

- दोनों ही प्रयोगसिद्ध विधि में महान हस्ती थे। हम्बोल्ड्ट ने प्रकृति को एक पूर्ण अवयव के रूप में प्रतिधारित किया, जिसकी उत्पत्ति किसी क्षेत्र विशेष में सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं के बीच विद्यमान पारस्परिक अर्न्तसंबंध के परिणामस्वरूप हुई थी।रिट्टर ने भी भूगोल को एक विवरणात्मक और प्रयोगसिद्ध विज्ञान माना था।
- न तो हम्बलोल्ड्ट और न ही रिट्टर को विज्ञान और दर्शन के बीच कोई द्वंद नजर आया था। दोनों का ही यह विचार था कि विज्ञान की स्थापना का आधार कांत द्वारा सुझाये गये तार्किक प्रस्थापना की बजाय गौर किये तथ्यों का विवरण होना चाहिए।
- हम्बोल्ड्ट और रिट्टर के अनुसार प्रकृति की एकता की अवधारणा प्रकृति में व्याप्त सभी वस्तुओं की विशेषताओं के कारणात्मक संबंध को स्वीकार करती है।
- दोनों में से किसी ने भी भूगोल की भौतिक संभावना संबंधी प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर उपलब्ध नहीं कराया था।
- लेकिन यह सच है कि कोई भी दो अलग-अलग व्यक्ति एक ही प्रकार से नहीं सोचते हैं और न ही कार्य करते हैं। हम्बोल्ड्ट और रिट्टर भी इस नियम के अपवाद नहीं थे। उनमें भी अन्तर था क्योंकि;
- उनके दृष्टिकोण में भिन्नता थी, हमबोल्ड्ट जहां निष्कर्ष पूर्ण दृष्टिकोण के समर्थक थे अर्थात विशेष से सामान्य की दिशा में आगे बढ़ते थे यानी वह विस्तृत तथ्यों के आधार पर कोई निष्कर्ष निकालते थे, लेकिन रिट्टर प्रेरक दृष्टिकोण के समर्थक थे अर्थात् सामान्य से विशेष दिशा की ओर बढ़ते थे।
- हम्बोल्ड्ट एक फील्ड अनुसंधानकर्त्ता थे जिन्होंने विस्तृत यात्रा करके जानकारी एकत्रित की थी। रिट्टर सही मायने में फील्ड अनुसंधानकर्त्ता नहीं थे और उन्होंने यूरोप के बाहर यात्रा नहीं की थी।उन्होंने अन्य लोगों के अनुभवों पर अधिक विश्वास किया था।
- हम्बोल्ड्ट का यथार्थवादी दृष्टिकोण था और उनका यह दृष्टिकोण पूर्ण रूपेण साध्यपरक नहीं था, लेकिन रिट्टर ने प्रकृति के संयोजन को ईश्वर की योजना के रूप में विवेचना की थी।
- हमबोल्ड्ट के अध्ययन में, मानव पर्यावरण में पाये जानेवाले असंख्य वस्तुओं में से महज वस्तु था, लेकिन रिट्टर का अध्ययन मानवकेन्द्रित था।
- हम्बोल्डट् का प्रभाव शैक्षणिक सर्किल के बाहर और जर्मनी के बाहर वैज्ञानिक यात्रियों के बीच कहीं अधिक था। जबकि दूसरी ओर रिट्टर का जर्मन भूगोल के विकास पर प्रत्यक्ष रूप से अधिक प्रभाव था क्योंकि उनकी मृत्यु के पश्चात उनके बहुत से छात्रों ने जर्मन भौगोलिक विचार की समग्र परम्परा को ही आगे बढ़ाया था।
- इतिहास और भूगोल के बीच अंतर्संबंध के बारे में हमबोल्ड्ट का कोई सुस्पष्ट विचार नहीं था, लेकिन रिट्टर ने दोनों के बीच के संबंध पर जोर दिया।
- हमबोल्ड्ट का दृष्टिकोण क्षेत्रीय (रीजनल) की अपेक्षा अधिक क्रमबद्ध था लेकिन रिट्टर को क्षेत्रीय भूगोल के संस्थापक के रूप में माना जाता है।

चरित्रों का सृजन लेखक द्वारा किया गया।

मैं ने अन्य व्यक्तियों द्वारा दिए गए विवरणों पर अत्यधिक विश्वास किया था। लेकिन मेरा विश्वास कीजिए, मैंने स्विटजरलैंड की संकीर्ण घाटी और इटली के गर्म प्रदेश की यात्रा की थी।

अब आज मैं यहीं समाप्त करता हूँ क्योंकि चमकीले देवदूत मुझे आवाज दे रहे हैं। स्वर्ग वास्तव में एक महान स्थान है। यदि आप मेरे बारे में और अधिक पढ़ना चाहते हैं तो कृपया पुस्तकालयों में जाइए। इससे मुझे वास्तव में बहुत प्रसन्नता मिलेगी।